2 8 OCT 2010 जनसत्ता

कांग्रेस और दलितों के बीच अब आंबेडकर की निर्वाण भूमि का मुद्दा

148

आत्मदीप

भोपाल, 27 अक्तूबर। कांग्रेस और दलितों के बीच अब दलितों के मसीहा डा. भीमराव आंबेडकर की निर्वाण भूमि का मुद्दा आ गया है। इससे दलितों को फिर से कांग्रेस से जोड़ने की राहुल गांधी की मुहिम को धक्का लग सकता है।

दिल्ली स्थित आंबेडकर निर्वाण भूमि राष्ट्रीय स्मारक बरसों से उपेक्षित पड़ा है। इसके लिए यूपीए सरकार को जिम्मेदार ठहराते हुए विभिन्न दलों के दलित नेता एक मंच पर आ गए हैं। उन्होंने आंबेडकर परिनिर्वाण भूमि सम्मान-कार्यक्रम समिति के जरिए देशभर में आंदोलन छेड़ने के लिए कमर कस ली है। समिति के राष्ट्रीय संयोजक टीएम कुमार ने ऐलान किया है कि जब तक यूपीए सरकार निर्वाण भूमि को बापू की समाधि राजघाट के बराबर दर्जा और सम्मान नहीं देती, तब तक देश के दलित गांधी परिवार की समाधियों पर नहीं जाएंगे। समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष इंद्रेश गजभिये ने यूपीए सरकार का नेतृत्व कर रही कांग्रेस के महासचिव राहुल गांधी के दलितों के घर जाकर भोजन करने को छलावा करार दिया है। उनका कहना है कि अगर राहुल गांधी को वास्तव में दलितों के सम्मान की चिंता है तो उन्हें सबसे पहले आंबेडकर की निर्वाण भूमि को सम्मान दिलाना चाहिए।

गजभिये ने तो नवंबर के पहले हफ्ते में भारत यात्रा पर आ रहे अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा को राजघाट की तरह निर्वाण भूमि पर भी ले जाने की मांग कर डाली है। इस बारे में भारत सरकार के अलावा अमेरिकी सरकार को भी लिखा गया है।

गजभिये ने बताया कि आंबेडकर की पुण्यतिथि (6 दिसंबर) पर समिति निर्वाण भूमि पर राष्ट्रीय श्रद्धांजलि सभा और सम्मान रैली करेगी। इसमें देशभर से बड़ी संख्या में दलित प्रतिनिधि भाग लेंगे। रैली में सभी दलों के प्रमुख दलित नेता शामिल होंगे। रैली राष्ट्रपति भवन तक जाएगी। राष्ट्रपति के सामने केंद्र के अनुचित रवैए के कारण निर्वाण भूमि स्मारक की बदहाली का मुद्दा उठाया जाएगा।

निर्वाण भूमि सम्मान बाकी पेज 8 पर

कांग्रेस और दलितों के बीच अब आंबेडकर की निर्वाण भूमि का मुद्दा

पेज 1 का बाकी

कार्यक्रम समिति के राष्ट्रीय संयोजक टीएम कुमार के मुताबिक बाबा साहेब आंबेडकर की निर्वाण भूमि दिल्ली में विधानसभा के सामने 26, अलीपुर रोड पर है। वहां रहते हुए ही आंबेडकर ने भारत के संविधान और बौद्ध धर्म ग्रंथ 'बुद्धा एंड हिज धम्मा' की रचना की। यहीं उन्होंने जीवन की अंतिम सांस ली। इस भूमि पर बना भवन राजस्थान के एक पूर्व नरेश ने बाबा साहेब को भेंट किया था जो बाद में एक उद्योगपति के हाथों में चला गया। दलितों की चार दशक पुरानी मांग मानते हुए राजग सरकार ने 2003 में उद्योगपति जिंदल से 16 करोड़ रुपए में यह भवन खरीदा। तब के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने इसे राष्ट्रीय स्मारक घोषित कर राष्ट्र को समर्पित किया और इसके विकास के लिए सौ करोड़ रुपए की परियोजना बनाई।

इसके बाद एनडीए की जगह यूपीए की सरकार बन गई जिसने इस परियोजना को पूरे पर पटक दिया। नतीजे में निर्वाण भूमि राष्ट्रीय स्मारक पिछले सात सालों से बदहाल है। समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष इंद्रेश गजभिये ने बताया कि बिजली कट जाने से निर्वाण भूमि अंधेरे में डूबी है। वहां घास उगी है और ताले लगे हुए हैं। इसके विरोध में 2007 से आंदोलन चल रहा है। ज्यादातर दलों और सामाजिक संगठनों के नेता व कार्यकर्ता चाहते हैं कि बाबा साहेब की जन्मभूमि (महू मप्र), दीक्षा भूमि (नागपुर) व चैतन्य भूमि (मुंबई) की तरह ही निर्वाण भूमि भी राष्ट्रीय स्मारक के रूप में विकसित, प्रसिद्ध व सम्मानित हो।